Dr. Ragini Kumari
Associate Prof. & Head
P.G. Centre of Philosophy
Maharaja College, Ara

Plato's Theory of Idea.

(Part – I)

ग्रीक दर्शन के इतिहास में Plato का Idea सम्बन्धी विचार महत्वपूर्ण माना जाता है। Plato के जगत के सत्ता सम्बन्धी सिद्धान्त को ही 'Theory of Idea' कहा जाता है Heraclitus (हेराक्लिटस) का यह विचार कि गति, परिणाम, परिवर्तन, प्रवाह और सन्तान ही एकमात्र सत्य है और नित्यता, अगति, एकता और अपरिणाम सिर्फ भ्रान्ति हैं, तथा साथ ही पारमेनिडज के इस विचार का कि नित्यता, अगति, एकता और अपरिणाम ही एकमात्र सत्य है, गति, परिणाम, परिवर्तन, प्रवाह इत्यादि इन्द्रिय जन्य भ्रम मात्र है, Plato ने अपने Theory of Idea में स्वीकार किया है। Plato अपने इस सिद्धान्त के अनुसार सम्पूर्ण जगत को दो भागों में बांट देता है (1) व्यावहारिक जगत जिसमें गति एवं परिवर्तन होते रहते हैं तथा (2) पारमार्थिक जगत इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या गति सम्भव नहीं होती है। व्यावहारिक सत्ता के सम्बन्ध में Plato का विचार हेराक्लिटस के समान है और पारमार्थिक सत्ता के सम्बन्ध में पारमेनिडज के विचार से सहमत है। Plato का Theory of Idea इन्हीं दोनों के विचारों का समन्वित रूप है।

Plato अपने विज्ञानवाद की स्थापना में Socrates (सुकरात) के प्रत्ययवाद से सहायता ली है, परन्तु सुकरात के प्रत्ययों और Plato के प्रत्ययों में अन्तर है। प्लेटो के प्रत्यय अमूर्त मानसिक अवधारणाएं हैं, परन्तु प्लेटो के विज्ञान की मनस से स्वतन्त्र अपनी सत्ता है। प्लेटो के विज्ञानवाद को भलिभाँति समझने के लिए यह जानना आवश्यक है कि प्लेटो अपने विज्ञानवादी सिद्धान्त पर कैसे आ पहुँचा। यानि

विज्ञानवाद का आधार क्या है? अब हम इस प्रश्न पर विचार करेंगे —

Plato ने अपने विज्ञानवाद का प्रारम्भ प्रत्यक्ष जगत् के आलोचनात्मक विश्लेषण से प्रारम्भ किया है। उनका कथन है कि व्यावहारिक जगत् में कहीं भी कोई वस्तु या गुण ऐसा दिखाई नहीं देता जो निरपेक्ष रूप से सत्य एवं स्थायी हो। प्रत्येक वस्तु एवं गुण परिवर्तनशील एवं अस्थायी है। एक वस्तु में समय-समय पर विपरीत गुणों को देखा जाता है। उदाहरण के लिए यदि हम अपना हाथ गुनगुने (गर्म) जल में डालें तो वह गर्म प्रतीत होगा, लेकिन यही जल किसी ऐसे व्यक्ति को जो किसी ऊष्ण स्थान से आ रहा है, उसे शीतल प्रतीत होगा। कहने का मतलब है कि एक ही समय में एक ही स्थान में जल गर्म और शीतल दोनों है। इस प्रकार Plato इस निष्कर्ष पर आता है कि प्रत्यक्ष जगत् की वस्तुएँ ऐसी हैं कि वे परस्पर विरुद्ध धर्मों को भी धारण कर सकती हैं। वे सद्-सद् विलक्षण है और इस कारण असत् है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि वाह्य जगत् या व्यवहारिक जगत् में कोई निश्चित ज्ञान नहीं हो सकता है और इसलिए वास्तविक तथा निश्चित ज्ञान के लिए किसी अन्य विषय का होना आवश्यक है जो स्थायी एवं निरपेक्ष हो। Plato ने इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विज्ञानों की स्थापना किया और माना कि वास्तविक ज्ञान केवल रूपों, प्रत्ययों अथवा सामान्य विज्ञानों का ही सम्भव है। प्रत्यय या विज्ञान जो अपरिणामी, सामान्य तथा नित्य हैं जो वस्तुओं के सारभूत तत्व हैं, हमारे ज्ञान का एकमात्र विषय हैं, इन्द्रिय जगत जिसमें अनित्यता, सन्देह, सापेक्षता का साम्राज्य है, हमारे ज्ञान का विषय कदापि नहीं बन सकता। विज्ञान जो नित्य, सार्वभौम और असंदिग्ध है, हमारे ज्ञान का वास्तविक विषय है।

— To be continued —

Scanned with CamScanner